Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

भारतीय महिला आंदोलन में गाँधी जी का योगदान

मीना चरांदा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग, कालिन्दी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 2
Page Number: 14-19

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 02 March 2021
Published : 07 March 2021

सारांश – राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को देखते है तो वह उनकी घरेलू भूमिका का विस्तारमात्र ही दिखती है। इस भागीदारी में उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में पुरूषों के समान कोई चुनाव या स्वतंत्र कार्य करने की गुंजाइश नहीं थी! आंदोलन में उनकी भागीदारी से न तो उनके घरेलू जीवन या पारिवारिक समीकरणों में कोई परिवर्तन आया और न ही उनकी राजनीतिक भूमिका में कोई बदलाव आया! खादी कार्यक्रम में काफी महिलाओं को जोड़ा गया पर सूत काटना, वस्त्र बुनना पहले से ही महिलाओं का क्षेत्र रहा है। देशी हस्तकला को आगे बढ़ाने की प्रक्रिया में महिलाओं की योग्यता और कुशलताओं को ही आगे किया गया है!

मुख्य शब्द – भारतीय, महिला, आंदोलन, गाँधी, राजनीतिक, पारिवारिक।

भारत देश के स्वीधनात संग्राम भी जब हम बात करते हैं। तो हम सभी पक्षों का अध्ययन करते है। चाहे वह राजनीतिक स्तर पर हो या अर्थिक। यदि हम स्वाधीनता संग्राम में महिलाओ की भूमिका पर दृष्टि नहीं डालते तो यह अध्ययन अधुरा माना जाएगा। राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों में महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया। महिलाओं को पहली बार घर से बाहर किसी गतिविधि में भाग लेने का मौका मिला। भारत देश एक पितृसत्तात्मकता से प्रेरित देश है पुरूषों के समान महिलाओं को राजनीतिक या सार्वजनिक गातिविधि में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। यह महिलाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी जिसे पार करके महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी भूमिका ही अदा नहीं कि बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन को सशस्त्र व दृढ़ बनाया! तनिका सरकार ने अपने शोध में इस पहलू पर विशेष जोर दिया है। उनके अनुसार महिलाओं का राष्ट्रीय राजनीति में सामंजस्य इसलिए आसानी से हो सका क्योंकि गांधी जी को एक संत एवं देवता तथा देशभक्ति के आंदोलन को धर्म–यु(माना गया। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं को बार–बार यह कहकर जोड़ा गया कि जब तक महिलाओं की भीतरी शक्ति बाहर नहीं आएगी, बलिदान अधुरा ही रहेगा!

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सामाजिक व धार्मिक सुधार आंदोलनों का महिलाओं के जीवन को बेहत्तर बनाने में योगदानः–

महिलाओं की भूमिका के अध्ययन में हम पाते हैं कि स्वाधीनता संग्राम में भाग लेना व उसको सशक्त बनाने पर महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं ने स्वाधीनता संग्राम में केवल भूमिका को प्रत्यक्ष रूप से निभाया परन्तु इन राष्ट्रीय आंदोलनों की वजह से ही महिलाएँ अपनी माँग व अधिकारों को भी समझने लगी। गाँधी जी के द्वारा महिलाओं के राष्ट्रीय आंदोलन में भागा लिया! और इन आंदोलनों का महिलाओं पर असर प्रत्यक्ष रूप से ही नहीं अप्रत्यक्ष रूप से भी रहा! महिलाओं के जीवन सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई!

गाँधी जी द्वारा 'खादी उद्योग' को अपनाना जिससे घरेलू महिलाओं को रोजगार प्राप्त हुआ गाँधी जी ने यहाँ तक भी कहा आंदोलन की शुरूआत वह अपने घर से भी कर सकती है।

विदेशी वस्तुओं का भहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं की अपनाने पर जोर

जो महिलाएँ केवल घरेलू काम काज में फंसी रही थी! अनेकों महिलाओं ने राजनीति में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया–यह महिलाओं के जीवन सुधार में पहला चरण था! जिसमें महिलाएँ घर से बाहर आई।

एनी बेसेंट व सरोजनी नाडडू जैसी महिला नेताओं से प्रेरित होकर महिलाओं ने राजनीति में शमिल होने की सोची।

85 प्रतिशत भारतीय महिलाएँ निर्धनता और अज्ञान के अंधकार में डुबी हुई थी। गाँधी जी ने महिला नेताओं से कहा कि उन्हें सामाजिक सुधार, महिला शिक्षा, महिला अधिकारों के लिए कानून बनाने के लिए काम करना चाहिए! ताकि उन्हें उनके बुनियादी अधिकार मिल सके!

गाँधी जी ने कहा की भारत इसलिए गरीब हो गया है क्योंकि उसने स्वदेशी हस्तकलाओं का परित्याग करके विदेशी वस्तुओं पर नर्भर रहना शुरू कर दिया है, महिलाओं से कहा स्वदेशी हस्तकलाओं को दुबारा से उत्पन्न करो, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाओ, विदेशी वस्तुओं को बंद करो खरीदना, हम दुबारा से संमिद्ध हरे जाएँगे!

महिलाएँ अनेको अत्याचार सहन करती थी परन्तु जब महिलाएँ अपने घर में आवाज उठा कर बाहर आई। उससे उनके जीवन पर काफी असर पड़ा! सम्मान की दृष्टि से परिवार में महिलाओं को स्थान उच्च मिला!

इन आंदोलनों द्वारा महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाया अब हम उन सभी आंदोलनों का वर्णन करने और राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका व योगदान पर दृष्टि डालेंगे।

असहयोग आंदोलन– सन् 1920–22 में जब असहयोग आंदोलन शुरू हुआ तो पहली बार महिलाएँ भारी संख्या में आंदोलन से जुड़ी। सैकड़ों महिलाएँ खादी औश्र चरखा बेचने गली–गली गई, उन्होंने खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए जूलूल निकाले औश्र समूहों में विदेशी कपड़ों की होली जलाई! उन्होंने शराब की दुकानों पर धरना दिया और शराब के लाइसेंस की सरकारी नीलामी को रोका! 1921 के कांग्रेस सम्मेलन में 144 महिला प्रतिनिधियों ने भाग

लिया। मुंबई में महिलाओं ने राष्ट्रीय स्त्री सभा का गठन किया जो पूरी तरह राष्ट्रीय एक्टीविज्म के प्रति समर्पित थी। यह पहला महिला संगठन था जो बिना पुरूषों की मदद से चलाया जाता था।

इसके दो उद्देश्य थे– स्वराज और महिलाओं का उद्धार एवं उत्थान! राष्ट्रीय स्त्री सभा की सदस्याएँ पूरे मुंबई में खादी प्रचार में लगी थी! उन्होंने नवंबर 1921 'प्रिंस ऑफ वेल्स' की भारत यात्रा के विरोध में पूरे मुबंई शहर में हड़ताल आयोजित की। उन्होंने खादी प्रदर्शनियाँ आयोजित की, वंचित वर्ग के लिए स्कूल खोले और सड़कों पर खादी बेची!

असहयोग आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी से उन्हें अपने लिए एक जगह मिली, महिलाओं के मन में अपनी उपलब्धियों के प्रति अहसास मिला!

श्रमिक वर्ग की महिलाएँ– 1920 के दशक में श्रमिक वर्ग की महिलाओं में तथा उनके बारे में नई चेतना आई। उससे पहले उनके बीच काम करने के कोई विशेष प्रयत्न नहीं किए गए थे। जो किए भी गए थे वे सिर्फ सुधारवादी थे। अभी भी राष्ट्रीय आंदोलन में निर्धन महिलाओं को जोड़ने के जो प्रयत्न किए गए उसमें उनकी कामकाजी छवि के बजाय घरेलू महिला की ही छवि को ध्यान में रखा गया! किसी भी राष्ट्रीयवादी महिला में उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने के लिए संगाठित प्रत्यत्न नही किए।

1920 के दशक के अंत तक श्रमिक आंदोलन मे महिलाओं में महिलाओं की उपस्थिति महसूस की जाने लगी थी। न केवल कई नामी ट्रेड यूनियनी महिलाएँ सामने आई वरन श्रमिक महिलाओं ने स्वयं प्रयत्न करके संगठित होना शुरू कर दिया था। श्रमिक आंदोलन में उनकी एक जगह लगी!

सविनय अवज्ञा आंदोलन– सविनय अवज्ञा आंदोलन से राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का एक नया चरण शुरू हुआ! मार्च 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन अहमदाबाद से डांडी तक 240 मील की डांडी–यात्रा से शुरू हुआ। यह आंदोलन अंग्रेजों के नमक कानून को तोड़ने और उनके नमक बनाने के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए चलाया गया। महिलाएँ इस यात्रा में हिस्सा लेना चाहती थी लेकिन गांधी जी ने उन्हें यह कहकर मना किया कि इससे अंग्रेज सोचेंगे की भारतीय कायर है और खुद के बजाय महिलाओं को आगे कर रहे है। फिर भी जहाँ–जहाँ यात्रा का पड़ाव होता भारी संख्या में महिलाएँ गाँधी जी को सुनने के लिए जमा होती! डांडी पहुँचकर गाँधी जी ने महिलाओं को एक सम्मेलन बुलाया और वहाँ उन्होंने महिलाओं के लिए आंदोलन में भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई!

डांडी यात्रा के बाद महिलाओं को आंदोलन में पूरी तरह सम्मिलित कर लिया गया, जैसे–जैसे आंदोलन भारत के और भागो में फैला, स्थानीय नेताओं ने महिलाओं की भागीदारी पर कोई रोक नही लगाई! आंदोलन के इतिहास में महिलाओं का भी नाम है। राष्ट्रीय आंदोलन में हर तबके की महिलाएँ आंदोलन से जुड़ी! कामला देवी चहतोपाध्याय जैसी महिला नेताओं से महिलाओं की गोरवमयी छवि बनी!

महिला संगठनों की उत्पत्ति– कई महिला संगठन और उनके नेटवर्क बने ताकि आंदोलन में महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित की जा सके।

(1) देश सेविका संघ, (2) नारी सत्याग्रह समिति, (3) महिला राष्ट्रीय संघ, (4) लेडीज पिकेटिंग बोर्ड, (5) स्त्री स्वराज संघ, (6) स्वयं सेविका संघ आदि बने!

इन सब ने महिलाओं की लामबंदी, जूलूस व प्रभातफेरी निकालने, धरने आदि आयोजित करने के काम के साथ–साथ खादी का प्रचार–प्रसार, चरखा चलाने का प्रशिक्षण और खादी बेचने आदि के काम भी किए!

महिला राष्ट्रीय संघ– 1928 में स्थापना हुई। बंगाल में यह पहला महिला संगठन था जिसने राजनीतिक क्षेत्र में काम करना शुरू किया। इनके उद्देश्यों में मुबंई के राष्ट्रीय स्त्री सभा की तरह देश की स्वाधीनता और महिलाओं की दशा में सुधार लाना था!

ए.आई.डब्ल्यू.सी– 1926 में स्थापना हुई महिलाओं के शिक्षा प्रसार तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए हुई। उसका मुख्य उद्देश्य यही था कि इससे महिलाओं का जीवन स्तर बेहत्तर होगा और ने अपनी ग्रहिणी की भूमिका को बेहत्तर ढंग से निभा पाएंगी!

लतिता का महिलाओं के लिए संदेश व निर्देश था ''उठो, जागो, अपने देश को अच्छी तरह देखो''!

इन सभी संगठनों ने महिलाओं को जाग्रत किया और देश प्रेम की भावनाओ को उजागर किया!

क्रांतिकारी और कम्युनिस्ट आंदोलन मे महिलाएँ– महिलाएँ क्रांतिकारी आंदोलनों से भी जुड़ी। इनमें अधिकतर छात्राएँ थी।

1920–30 के दशक मं क्रांतिकारी आंदोलन के भीतर महिलाएँ और पुरूष एक–दुसरे से दूर रहे, इस नियम का पालन काफी कठोरता से दूर रहे, इस नियम का पालन काफी कठोरता से करने की अपेक्षा की जाती थी।,

कल्पना दत्त, प्रिति वाडेकर जैसी महिलाओं ने क्रांतिकारी आतंकवादी आंदोलन में भाग लिया!

1930 के दशक के उत्तरार्ध में कई कम्युनिस्ट महिलाएँ नारीवादी क्षेत्र में आई। उषाबाई डांगे जैसी कम्युनिस्ट महिलाओं ने मुबंई में सुती वस्त्र में लगी श्रमिक महिलाओं को संगाठित किया।

इंग्लैण्ड ने राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए कम्युनिस्ट तथा राष्ट्रवादी महिलाओं के संयुक्त भागीदारी अभियानों की शुरूआत हुई। तभी रेणु चक्रवर्ती और कृष्णन जैसी कुछ महिलाएँ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हुई।

1939–40 में छात्रों का संगठन (AISF) बना जिसमें अनेक जुझारू विचारधाराओं की छात्राएँ शामिल हुई।

किसान आंदोलन–महिलाओं की भूमिका

तेभागा आंदोलन– यह आंदोलन बंगाल में हुआ था सन् (1946–47) में आरंभ हुआ था। 'यह एक' ऐसा आंदोलन था जिसने क्रांतिकारी स्वरूप धारण कर लिया था तेभागा आंदोलन की मुख्य मांग थी कि जब गरीब किसान जमींदारों के खेत जोतता है तो उसे 2/3 हिस्सा मिलना चाहिए, न केवल आधा! कृषक–महिलाओं ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई!

चम्पारण किसान आंदोलन– चम्पारण किसान आंदोलन को चम्पारण सत्यग्रह आंदोलन क नाम से भी जाना जाता है। यह आंदोलन प्रमुख नेता गाँधी जी के समर्थन से आरंभ हुआ। इसमें महिलाओं ने बढ़–बढ़ कर हिस्सा लिया! किसान–महिलाओं ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यह आंदोलन अहिंसक आंदोलन था। और गाँधी जी तो अहिंसा के पुजारी माने जाते है और इस आंदोलन को गाँधी जी का समर्थन प्राप्त था।

भारत छोड़ो आंदोलन–1940 का दशक– 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में हजारों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया! हजारो महिलाएँ भूमिगत हुई, सामानांतर सरकार बनाने में सहायक बनी, कई गैर कानूनी कामों में भागीदार बनी! बड़े पैमाने पर महिलाओं को आत्मरक्षा–संबंधी प्रशिक्षण दिया गया ताकि वे जापानी बमों और अंग्रेजों तथा अमरीकी यौन उत्पीड़न से अपनी रक्षा कर सके।

बारीसाल में महिलाओं की आत्मरक्षा समितियाँ बनी, जहाँ उन्हें पहले लाठी चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था।

1940 के दशक में देश के स्वाधीन हाने के आसार दिखने लगे थे और महिला आंदोलन पूरी तरह से स्वाधीनता आंदोलन में समाहित हो गया था।

गाँधी जी और महिलाएँ

स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी गांधी जी के प्रभाव से हुई, इसे सभी मानते है। 1920 के दशक तक जीते जागते गाथापुरूष बन चुके थे। और लोग उन्हें मुक्ति क दुत की तरह देखने लगे थे। वे जहाँ–जहाँ जाते, आने की खबर भर से भीड़ इकट्ठा हो जाती, दंगे हो जाते थे! गाँधी जी का ध्यान महिलाओं की जुझारू क्षमता पर पहली बार दक्षिणी अफ्रीका में खिंचा था!

वहाँ उन्होंने देखा कि भारी संख्या में महिलाएँ उनके राजनीतिक विचारों से प्रभावित होती है। उनके नेतृत्व में हुए कई आंदोलन में वे जेल गई, बिना किसी शिकायत के जेल की कठोर सजा झेली और खदान श्रमिकों को हड़ताल में शामिल कर सकी। गांधी जी ने कई बार इसका जिक्र किया कि दक्षिणी अफ्रीका के सत्याग्रह आंदोलन में उन्होंने महिलाओं में आत्मत्याग और पीड़ा सहने की अद्भूत क्षमता देखी!

गाँधी जी की सोच थी कि गर्भधारण और मात्त्व के अनुभवों से गुजरने के कारण महिलाएँ शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं। गाँधी जी ने माँ को नैतिक और आध्यात्मिक गुणों की खान, पुरूषों की गुरू और मार्गदर्शक के रूप में देखा और दूसरों को भी इस रूप में देखने पर जोर दिया

गांधी जी ने न केवल भारतीय महिलाओं के गुणों पर जो दिया बल्कि यह भी कहा कि उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है और कुछ काम ऐसे है जो केवल वही कर सकती है!

निष्कर्ष– जब इस नजरिए से हम राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को देखते है तो वह उनकी घरेलू भूमिका का विस्तारमात्र ही दिखती है। इस भागीदारी में उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में पुरूषों के समान कोई चुनाव या स्वतंत्र कार्य करने की गुंजाइश नहीं थी! आंदोलन में उनकी भागीदारी से न तो उनके घरेलू जीवन या पारिवारिक समीकरणों में कोई परिवर्तन आया और न ही उनकी राजनीतिक भूमिका में कोई बदलाव आया!

खादी कार्यक्रम में काफी महिलाओं को जोड़ा गया पर सूत काटना, वस्त्र बुनना पहले से ही महिलाओं का क्षेत्र रहा है। देशी हस्तकला को आगे बढ़ाने की प्रक्रिया में महिलाओं की योग्यता और कुशलताओं को ही आगे किया गया है!

संदर्भ सूची

1. बारबरा साउथर्ड, ''फेमिनिज्म ऑफ महात्मा गांधी'', गांधी मार्ग, वाल्यूम 13, नं. 71, अक्टूबर 1981, पृ. 403
2. एम.एस. पटेल, दी एजुकेशनल फिलोस्फी ऑफ महात्मा गांधी, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1953, पृ. 109
3. पुष्पा जोशी, गांधी ऑन वूमेन, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1988, पृ. 30–31
4. अनिल दत्ता मिश्रा और सुषमा यादव (सं.), सोशियो–पॉलिटीकल थॉट, वाल्यूम–3, गांधीयन आलटरनेटिव, आर.पी. मिश्र और के.डी. गंगराडे (संपा.), नई दिल्ली, 2005
5. करतार सिंह, रूरल डेवलपमेंट : प्रिंसिपल्स, पॉलिसीज एंड मैनेजमेंट, नई दिल्ली, 1999, पृ. 85–86
6. लॉयड आई रूडोल्फ एंड सूशान एच रूडोल्फ, 'पोस्ट मार्डन गांधी एंड अदर एसेज', ऑक्सफोर्ड पब्लिशर्स, 2006, पृ. 10
7. तिसडेल, क्लेम, इनवायरनमेंटल इकानॉमिक्सः पॉलिसिज़ फार इनवायरमेंटल मैनेजमेंट एंड एसटेनेंस डेवेलपमेंट, केंट, एडवर्ड इल्गर पब्लिशिंग लिमिटेड, 1993, पृ. 193
8. ऊमेन, टी.के., स्टेट एंड सोसाइटी इन इंडियाः स्टडीज इन नेशन बिल्डिंग, नई दिल्ली, सेज पब्लिकेशन, 1990
9. कृष्णमूर्ति जे., एजुकेशन एंड सिग्निफिकेंस ऑफ लाइफ, नइ दिल्ली, बी.आई. पब्लिकेशन प्राइवेट लि. 1987, पृ. 63
10. Agarwal, Shriman Narayan, gandhian Constitution for Free India, Allahabad, Kitabistan, 1946
11. Alexander, Horace, Gandhi Through western Eyes, Bombay: Asian Publishing House, 1969
12. Ashe, Geoffrey, Gandhi: A Study in Revolution, Bombay: Asia Publishing House, 1968
13. Bose, N.K., Gandhiji The Man and His Mission, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, 1966
14. Dallmayr, Fred, Beyond Orientalism, New York, New York University Press, 1966
15. Dhawan, G.N., Political Philosophy of Gandhi, Bombay, Popular Book Depot, 1946